A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 320 Subject HINDI संग्रह

Name of MSS अलंकार ग्रन्थ

Author Not Given

Period Folios 15

Script DEVANAGIRI Source Prithi Pal Singh

Missing Folios N.A.

ॐस्वस्तिश्रीगणेशायनमः श्रीव्रषभानकुमारिवरसुंदरनंदकुमार
विहरतिविवधविनोदजुतव्रंदाविपनमंझार १॥प्रणवौपद
पंकजविमलपावनपरमपराग॥शिवसुकसारदसेस
स्रुतिवदतवरनजुतराग २॥नेतनेतनितनिगमकहिगा
वतगुनगनगाथ॥सोअनेकमंगलकरोसगुनब्रह्मब्र
जनाथ ३॥असरनसरनविरदविदतिकहितपुरानपु
कार॥करहैंक्रपाभरोसमुहिदीनवंधुदनुजारि॥४॥
गननायकघायकविघनदायकसुमतिउदार जासु
क्रपालहिहोतनरलायकसमसंसार॥५॥तासुचरनअ
रविंदकहुकरिकरिअमितप्रनाम अलंकारवर्ननकरों
ग्रंथनिलयअभिराम ६॥वार्ता॥प्रथमअलंकारको
लछनकहितहै॥दोहा॥अर्थशव्दकरिकरतहैंजोर
सकोउपकार॥भूषनजैसेजीवकोतेकहीयेअलंका
र ७॥वार्ता॥अर्थकरकेवासवदकरकेजोरसकोउप
य[illegible]रकरे॥जैसेजीवकोभूषनसोभादेयतहै तैसेर
नप
यघाव[illegible]भादेय सोअलंकार॥पुनःलछन॥दोहा
तासीभो[illegible]हैंकवितमैसोभाजेहांहोय॥कहिकुंडल

320

हास्यादिलौं अलंकार है सोव॥८॥ द्वैप्रकार सो जानिये

शब्द अर्थ व्यवहार॥ इक शब्दालंकार है इक अर्थाले

कार ९॥ चमत्कार जहां शब्द क्रौत सो शब्दालंकार

चमत्कार जहां अर्थ क्रौत सो अर्थालंकार॥१०॥ वार्त्ता

प्रथम अर्थालंकार कहितहै॥ दोहरा॥ ऊपमा अलंक

लंक्षत जुतहे एदोऊसार॥ ऊपमान रुऊपमेयको ता

तेकरें विचार॥११॥ जासें ऊपमा जानिये सोई है ऊप

मान॥ सोऊपमेय जुवर्नीये ऊपमान सें समान १२॥ हो

य बडाई समकीये जासें नरु ऊपमान॥ जाको वर्ननकी

जीये सो ऊपमेय न जान॥१३॥ यह जो ऊपमानादिको

कीजैलँक्षनभाय॥ तौ प्रतीपलंकार मैकव हूं यह नहि

जाय १४॥ अथ ऊपमा अलंकार लक्षन॥ ऊपमेय हि ऊ

पमान सों कीजै जहां समान॥ इक साधारण धर्म करि

तहं ऊपमा कवि जान॥१५॥ पुनः लक्षन॥ विन संभा

वन वर्नीये एक वार ऊपमेय॥ समता करि ऊप

सों ऊह ऊपमा चितलेय॥१६॥ जहां भेद मैकौ

सरूप समान॥ ताही को ऊपमा कहें पंडित

॥साधारनधर्मजुदर...
रहेधर्मइकभाग ॥समसी
सिसेभ्रादि... ॥चवकाहि
कविराज।

1A

न॥१७॥ऊपमानऊपमेयजहांवाचकधर्म विचार॥ इन
ऊपमाहीनतहांलुप्तोपमाविचार॥१८॥ वार्त्ता॥ ऊपमानऊ
पमेयऔरदुहूनमैजोसाधारनधर्मऔरऊपमावाचकरा
ब्द।चारयोजहांहोंयतहांपूर्नोपमाजानीये जहांइनचारयो
नमै।एकदोयतीननहीकहीयेतहांलुप्तोपमाहोतहै॥
पूर्णोपमाऊदाहर्न यथा॥ रघुपतकीरतगंगसीत्रिपुर
निकरतविहार॥ऊपमानादिकचारसांविहरनधर्मवि
चार॥१९॥वार्त्ता॥पूर्णोपमाद्विविध॥एकश्रोतीऔरएक
आर्थी॥ इनकेलक्षन॥दोहा॥समताकोवाचकजहांश्रो
तीतहांवखान॥समकोवाचकहोयजहांतहांआरथीजा
न॥२०॥वार्त्ता॥समताधर्म॥समऊपमान॥जहांधर्मके
साथवाचकआवैतहांश्रोती॥जहांऊपमानकेसाथवा
चकआवैतहांआर्थी॥पूर्णोपमाश्रोतीआर्थीऊदाहर्न
यथा॥निजजनरूचितासीकिरेमोमैहरिरूचिताय
अरुदीजैयहजगरहेविधुसोजसछितछाय॥२१॥
यथावा॥कवित्त॥नैननिमैखंजनकीदेखीयेचपल
तासीभौंहनिमैधनुषटिढाईसीवसतहै॥दंतनिमै

320.

2 हीरनिकीसेततासीसेतताकैअधरनिविद्रुमललाई
सीलसतहै॥कंचनसोसोहनोसरीरवलवीरवा
कोवेनीवाकीनागनिसीलोगनिडसतहै॥स्रूरत
निहारचलदेषीयेमुरारिजाकेदेषेऔरदेवनिकी
भावनानसतहै॥२२॥वार्त्ता॥श्रोतीकहास्रूनिवेईते
अर्थसमुझीये॥औआर्थीकहाअर्थकीयेतवसमुझी
ये॥सोजहांधर्मकेसाधवाचकआवेगोतहांस्रूनतही
अर्थसमुझीयेगो॥जहांउपमानकेसाधवाचकआ
वेगोतहांअर्थकीयेतेसमुझीयेगो सोमुक्तयहील
छनहै श्रोतीकहास्रूनिवेईतेअर्थसमुझीये॥आर्थी
कहाअर्थकीयेतवसमुझीये॥जैसेकह्योकुचनिमै
गिरकीकठनताईसीहै तोकहितहीकठनताई
कुचनिकीसमुझी यहतोश्रोती॥औरकहेकुचगि
रसेतोतहांगिरकेआकारविस्तारपैद्रष्टगईजव
यांअर्थकहीयेइनमैगिरकीसीकठोरताहै तव
अर्थकीयेसमुझीये यहआर्थी॥प्रश्न॥गिरसेकु
चकठन यहपूर्णोपमाहै॥तहांकहितहीकठना

2A

ईस्तोसमनमपनी॥स्तनतहीयहश्रोतीक्योंभासी॥गिरसेयाम्रा
द्दमैतोऊपमानकेसाधवाचकहै॥यातेयहतोश्राधीहैं॥श्रोती
क्योंभासी॥तहांउत्तर॥गिरसेकुचकठनयामेयहश्राधी
है कठनजेकुचहैंतेगिरसेहै कठनाईकेसाधसाम्पतान
ही पातेश्राधीहीहै॥श्रोरप्रस्न॥कोईकहेश्रोतीश्राधी
द्वैभेदकाहेकीजै जाकेसाधवाचकश्रावैसोईऊपमान
कहीये जाकीऊपमादीजीयेगीसो धर्मकैसेकहावेगो
वहितोऊपमानहीहै जैहै तोश्राधीहीमुक्तहै श्रोती
कोजुदोभेदक्योंकीयो॥तहांउत्तर॥जोतुमकहोंटि
ढाईसीभौंहहै टिढाईहीऊपमानह्वैगई क्योंतुमकहि
तहेंजाकेसाधसीश्रावैसोईऊपमान॥तोतहांपरनोप
माजववकनहोंतवचास्योल्पायहो अपमान ऊपमेय
वाचक धर्म तवटिढाईजुहे धर्मतामैतेधर्मकोनकों कहिहों
यातेदूजोभेदसंभवैहै कदाचित कोऊकहे टिढाईमै
मवहनताधर्मकहिहै॥तोटिढाईसीभौंहजवकही
तहांटिढाईकोनसीवहवस्तुजोकोऊचहीयेही तहां
वस्तुटेढीश्रनेकहै ईहांधनुषहीकहिहों॥जवहीधनु

3 बक ह्यो नवहीटिढाईधर्महोतभयो॥यातेआतीआर्थी
देऊभेदयुक्तहै॥अबलुप्तोपमाकहितहै दोहरा॥कैउप
मानकिधर्मकैइवकोहोयजुलोप॥उहंतिहूंकेलोपतेलु
प्तोपमाअरोप॥२३॥लुप्तोपमाकेभेदगनावतहै काव्यप्र
द॥वाचकलुप्ताएकधर्मलुप्तापुनजानहु॥धर्मवाचकहू
लुप्तवाचउपमेयवखानहु॥उपमानहिपुनलुपहुवाचउप
माननरावहु॥लुपोधरमउपमानएकउपमेयहिभाव
हु २४॥वार्त्ता॥वाचकलुप्ता॥ धर्मलुप्ता॥धर्मवाचकलु
प्ता॥वाचकोपमेयलुप्ता॥उपमानलुप्ता॥वाचकोपमा
नलुप्ता॥धर्मोपमानलुप्ता॥धर्मोपमानवाचकलुप्ता॥य
हआठभेदलुप्तोपमाकेहैं॥वाचकलुप्ताउदाहर्न॥यथा॥
सखितवचंद्रवदनसुघदविसदवसनविचसोहि॥नगध
रनैनचकोरसमममगनभ्रमितसुधहैंहि॥२५॥धर्मलु
प्तोपमायथा उदाहर्न॥कवित्त॥वालचलीजातनिजवा
लमनिकेतपगनेवरकहितकामसाहिकेसुजससे॥वि
सदवसनविचवदनविकसिरह्योवनरवंतसोभाकेस
रुहसुधारससे॥लोललोललिततकपोलपर

3A

छूटीअलिकावलिलतासोंलसैलोचनअलसते॥हारनरु
चिभारविचऊनत्तिजदेषीयतरूनरसारिसलिलमैसोनैके
कलससे २६॥धर्मवाचकलुप्ताउदाहर्न॥चलचलचंद
मुषीतहांजिहिनिकुंजव्रजचंद॥थिल्पोरुचिरअरिविंदकु
लथिल्पोमलिंदनवृंद॥२७॥वाचकोपमेयलुप्ता॥सज
सजनी अंगानसवतजरिक्षचलवनधाम॥विरहिविक
लघनस्यामतनमिलदामिनअभिराम॥२८॥चारलु
प्तोपमाकोउदाहर्नयथा॥म्रगसेसुंदरनैनहैंदारिम
रदकमनीय॥केहरसीकटहैललनगजगमनीनम
नीय॥२९॥वार्त्ता॥म्रगसेसुंदरनैनहै यामैम्रगकेनैन
सोनरी उपमानउपमानलुप्ता॥केहरसीकटिहैललन॥यामै
केहरकीकटकटिकोउपमानहै ताकोलोपहै छीनतासाधा
रनधर्मकोलोपहै यातेधर्मोपमानलुप्ता॥गजगमनीन
मनीय॥यामैगजकोगमनउपमान ताकोलोपहै उपमावा
चीसोसदनहीहै मंदमंदसाधारनधर्मकोलोपहै ना
यकाकोगमनउपमेयहै॥यातेधर्मोपमानवाचकलुप्ता
यहआठभेदलुप्तोपमाकेकहे॥औप्रस्तारकीरीतसोंउपमाअ

॥दारिमरदकमनीय॥यामैदारिमकेबीजउपमानतिनकोलोपहै सेवाचकको॥
॥लोपहै॥यातेउपमानवाचकलुप्ता॥६॥

॥पूरनऊपमा॥एकविधिआठसलुप्ताजानि॥
॥श्रौतिआर्थीद्विविधिसोकियेअठारहि॥
॥मान॥

लंकारकेषोढसरूपहोतहै सोईहांनहीजितायेअलंकार
मालासोंजानीये॥ऊपमाभेद॥ एकपूर्णोपमा॥आठलुप्ता
पमा नैाप्रकारभये तेसबश्रौतीआर्थीकरकेअठाराप्र
कार होतहै॥दोहरा॥ऊदाहरनइनसभनिकेकहिहैंम
धिव्यतिरेक॥तेसभऊहठांसमुझीयोकविकोविदसविवे
क॥३०॥वार्त्ता॥इनसभकेऊदाहर्नव्यतरेकालंकारमैक
हेंगे॥आक्रतसीलवरनभावकीसमताकरकेसातप्र
कारकीऊपमाऔरहोतहै॥आक्रतभावऊपमा॥१॥सी
लभावऊपमा॥२॥वरनभावऊपमा॥३॥आक्रतसी
लभावऊपमा॥४॥आक्रतवरनभावऊपमा॥५॥सील
वरनभावऊपमा॥६॥आक्रतसीलवरनभावऊपमा
॥७॥एसातभेदहोतहै॥यथा॥ऊदाहर्न॥कंबुग्रीवकोकिल
वचनविद्रुमअधररसाल॥नागनिवेनीसैलकुचविधु
मुषरामनिवाल॥३१॥वार्त्ता॥सषीसषीवचन॥नायका
कीऊस्तुतकरतहै कैसीहैयह कंबुग्रीव कंबुसंषकीन्या
ईग्रीवाहै॥ईहांसंषकीऔग्रीवाकीएकसीआक्रतहै॥याते
आक्रतभावऊपमा॥१॥कोकिलासेयाकेवचनहै॥ईहांको

किलाकेवैननकोऔनायकाकेवैननकोएकसोमृदुताको
स्वभावहै॥यातेयहसील्लिभावऊपमा॥२॥विद्रुमजोरं
गहैतिनकेसमानअधरहैं॥ईहांदोऊनकोरंगसमानहै
यातेवरनभावऊपमा॥३॥नागनसीवेनीहै॥ईहांनाग
नीकीऔवेनीकीएकसीआकृतहै औएकसोईरंगहै॥याते
ईहांआकृतवरनभावऊपमा॥४॥सैलसमकुचहै॥ईहां
सैलकीऔकुचनिकीएकसीआकृतहैऊंतंगता औएकसो
सीलहैकठोरताको॥यातेयहआकृतसीलभावऊपमा५
विधुचंद्रमासोमुखहै ईहांमुखकीऔचंद्रमाकीएकसी
आकृतहै औएकसोस्वभावहैसीतल औएकसोईगौररं
गहै यामैआकृतसीलवरनभावऊपमा ६॥मरवालदा
मिनवीजुरीसीहै॥ईहांदोऊनकोएकसोसीलहैचपल
ताको॥औएकसोईवरनहै॥यामैसीलवरनभावऊपमा
७॥यहिसातभेदभये॥इनकरकेजेपाछेआतीआधीइत्या
ऊपमा दिक[illegible]कहैहैतिनसर्वकेसातसातभेदहोतहै योंऊपमाअ
लंकारवधतहै॥अथमालोपमाअलंकारलक्षन॥दोह
रा॥जहांवहुतऊपमानसोंसरसवरनीयेएक॥तारिल

5

लितमालोपमाभावतसकविसनेक॥२२॥जहां एकमें।
आनीयेउपमारीतअनेक॥ताहिकहेंमालोपमापंडत
कियेविवेक॥२३॥द्वैभांतनिमालोपमाकहेंसयानेलोइ
साधारणवहधरमसोंभिन्नअभिन्नसुहोइ॥२४॥साधा
रनधर्मभिन्नमालोपमालछन॥जहांसाधारनधर्मन
निकहीयेकहिउपमान॥भिन्नसाधारनधर्मसोमालोप
मासुजान॥२५॥यथा॥तारासीकान्हतरायनसंगअचंद्रक
लानिसचंद्रकलासी॥दामिनिसीघनस्यामसमीपलगैतन
स्यामतमालरलतासी॥आधिकीआधिसीकहिकेसवकाम
केधाममैदीपसिषासी॥सोनेकीसीकसीद्रूरभयेतेलसेउ
नमैउरहारप्रभासी॥२६॥यथावा॥सरदकीजोन्हसमसी
तलकरतनैनवांसुरीकीधुनजिमचितकोहरततहै॥कम
लाज्योंपरतमनोरथननीकेरितुपावसज्योंवसुधाकोरसि
लीकरतहै॥दामनीज्योंस्यामघनतनमेलसतसुधामरत
ज्योंनवसिषमाधुरीधरतहै॥फलीरितुराजकीसीवेली
अभिरामनाथादेषोचलस्यामदेषवेकीजोपेरततहै॥२७॥
अथसाधारनधर्मअभिन्नमालोपमालछन॥जहांसाधा

5A

रनधर्मवरूकद्योहोयऊपमान॥सोमालासाधारनैधर्मग्र
भिन्नवषान॥३८॥यथा॥दोरग्राइदासीकलाचिधकीकला
सीकमलासीविमलासीजैंनवसरीर॥कंचनकचोरनिमे
चोवाकरएकनकेएकलीनेललतिगुलावदेवनदनीर॥
ऊजरेजरायनकेडवाभरिभरिल्पाईमोतीमनिमालहा
रलैलैराधेतीरतीर॥एकैचितचायकैचहूंघांचुनिचुनि
ल्पाईचंदनसेचांदनीसेचंदसेरुचिरचीर॥३९॥यथावा
राजसिरिज्यांनीतविननिसविनजैसेचंद॥हिमकरपंक
जज्यांभईवालविनरहिसांमंद॥४०॥यथावा॥चंदनसीचंप
कसीचंद्रचूढचंडकसीचारुचंद्रमुषनिकेमंदमंदहासती
॥कमलसीकेतकेसीकामतरुकुसमसीकलकुंदकानन
सीकरकासीकासती॥सरदसीसानदसीसरदकेवार
दसीपारदसीनारदसीविसदरुवाससी॥श्रीनिहाल
सिंहजूकीपुनयमईकीरतिसीफैलरहीचंद्रकाविमल
पयरासमी॥४१॥अथग्रनन्वयालंकारलछन॥जहंऊप
माऊपमेयकोकाहिवोएकैहोय॥ग्रलंकारवहिजानीयोक
होग्रनन्वैसोय॥४२॥पुनः॥बाकोबासमकोकहैग्रोरसद्ध

६

6 समिटजाय॥ताहिग्रनन्वैकहितहैग्रलंकारकविराय॥४३॥

ोककहैंग्रमलकमलमुखसीताजूको।एककहैंचंद्रमाई

ग्रानंद कोकंदरी॥होइजोपैकमलतौरैनमाहिसकु

चैरीचंदजोतौवासरमैहोयदुतिमंदरी॥वासरहीक

मलरजनिहीमैमुखचंदवासरहूंरजनीविराजैज

गवंदरी॥देखेमुखभावतनदेख्योईकमलचंदया

तेमुखमुखैसखिकमलनचंदरी॥४४॥यथावा॥रूप

उजासप्रभाकेप्रकासविलासहुलासनहैंनितघेरे॥कामक

लारतिलाजभरेसकुचेदुरकेजवमोहनहेरे॥प्यारीपि

यासिरमैंरतीयानिरखैंहरत्पें[illegible]कीजीयेनेरे॥

सीतलहोतहींयोजिमतेदुखमोचनलोचनतेरेस

तेरें॥४५॥यथावा॥दिषतमंदग्ररविंदद्युतिचितनरचि

तकचिपंद॥तवमुखलखमाचमसमसुखितवमुखग्रोपच

मंद॥४६॥कहूंवडवानलकीवरतकरालज्वाल

कहूंकमलाकेपतसोवतउरगमे॥कहूंहालाहर

लकेवारितपरवाहवहुकहूंसघालाहिरीलस

तपगपगमे॥कहूंमरभरतातेभाजेम्रमिघरमासे

6A

कहूंखंजियेनदूजोमोतीमननगमे॥कहूंसुरकहूंरजनीप
तऊजागरहैसागरसमानएकसागरहीजगमे॥४७॥यथावा॥
जोकहोकेसवसोमसरोजसुधासुरभृंगनिदेहरदहैहै॥दा
डिमकेफलश्रीफलविद्रुमहाटकाकोटकबाघसहेहै॥कोक
केहर कपोतकरीअहिकोकिलकीरकुचीलवहेहैं॥अंगअनूप
मवातियकेअनकीउपमाकहुबेईरहेहै॥४८॥अथउपमेयो
पमाअलंकारलछन॥याहीकोपर्यायोपमाकहितहै॥दोहरा
जहांउपमाउपमेयकोकथनपरसपरजान॥सोउपमेअप
माऊहैअलंकारपहिचान॥४९॥उपमानैउपमेयकौउपमेयो
पमालान॥जहांसुउपमेयोपमावर्नत[illegible]समान॥५०
उपमालागैपरसपरसोउपमानुपमेय॥खंजनहैतुवनैन
सेतुवद्दगखंजनसेय ५१॥यथावा॥तुवमुखसुखमासिंध
विचकारिसोभाविसतार॥रदनरतनज्योंलसतहैरतनरदन
ज्योंचार॥५२॥यथावा॥सीलसुभायनिकाईमहाचतुराईक
होइहिंभांतकहूंहै॥तोसमनानकोओरकहोंयहरूपअनूपनिहंद
वधूहै॥मेरेमनोरथहूंसीसोवनायकेसाचीरचीकमलासनज
है॥ओघनिघोटिदिसकैछिनहूजिहितोसीजुन्हाईजुन्हाईसीतुहै

7

यथा वा॥ उदित जहांन आसमान मैं महान जोत को विदकमो
दनि प्रमोदित करत है। लोक लोकपलकुल को कथने सोक
सने अरिको कमदनि अमोद मैं भरत है मोद भरे जाचक चको
र ज्ञान चारयो को ददारिद तिमर दीह दीपति दरत है॥ श्री
निहालसिंह भूप सुजस समान आशिमारिके समान जस सु
षमा धरत है ५४॥ अथ रसनोपमा अलंकार लछन॥ आगे आ
गे की जी ये उपमेयो उपमान॥ ताहि कहित रसनोपमा पंडित
बुद्ध निधान॥५५॥ यथा॥ सारद सम मति सु मति तव मति सम सु
मन वषान॥ मन सम दान सु दान सम फैल्यो सुजस जहान
५६॥ यथा वा॥ मोहन के अभिलाष सी वैस लसै वय वै सम
रूप वन्यो है॥ रूप समान लुनाई विराजै लुनाई सो जीमै सु
ज्ञानपनो है। जैसी सुजानता तैसो विचार के कान्ह कुमार
सों नेह तन्यो है। नेह समान लहै सुषसाज सु राधे को जी
वनि धन्य गन्यो है॥५७॥ अथ प्रतीपालंकार लछन॥ प्रक
तहि गहसांच प्रकतैं रि अप्रकृत प्रवषान॥ वरनत प्रथम प्रती
पत हंकविमवनी पजा॥५८॥ ते रे सुजस समान न तप सोह
तकलानिधान नवप्रताप तीव मसतर सग्रीषम नितु को भान॥

7A

॥ यथा॥ सिंधु लसत तेरे सरस तुव कीरति सम वार ॥ व
डवानल की ज्वाल तहं सम तेरे करवार ॥ ५९ ॥ वार्त्ता ॥ सिंधु उपमा
नसो उपमेय कीयो ॥ राजा उपमेय सो उपमान कीयो याही ते प्रथम प्र
द्वितियप्रतीपल
तीप ॥ उपमेय को उपमान ते जहां अनादर होय ॥ गरब करत मुख
को कहा चंद हिनि कै जाय ॥ ६२ ॥ यथा ॥ आनन के सम जानको
गरब करै मतिवाल ॥ देखै से जगत मै ससि सै वाल अनाल
६३ ॥ अथ यथा ॥ लखि रूप समा निज अंग की जिन तंक रैग रूर ॥
चंपक कंचन चंचला कहा जया के तूर ॥ ६४ ॥ यथा ॥ नाहकतं
निज रूप को क्यों तिय करति गुमान ॥ देख दुति करि उरबसी
त्रितीयप्रतीपल
तो सी है व ड भाग ॥ ६५ ॥ समता देउपमेय की निंदोजहं उपमा
न सो प्रतीप है तीसरो ताको करो बखान ॥ ६६ ॥ पाहन जिन जिय
रव धरै हो हीकठन अपार ॥ दुरजन के चित देखीये तोसे ला
खहजार ॥ ६७ ॥ चतुर्थ प्रतीप ॥ उपमेय को उपमान जब सम
ता लायक नाह ॥ अति उत्तम दृग मीन से कहै कोन विधजाहि
यथा ॥ कहीये करा समानि मै ते ऊरूक विरूजान जे सस
धर को कहि तै हैं स्त्री व्रजराज समान ॥ ६८ ॥ पंचम प्रतीप ॥
जहां देख उपमेय को कोन काम उपमान भासत तहां प्रतीप को

8 पांचभांतकोजान ७०॥तुवकीरतपरतापके‌फैलतहींतिहूंलो
क॥सूरससिनकोकोगनैजहांननितआलोक ७१॥अथ
रूपकालंकारनिरूपनं॥उपमानरुउपमेयकोवरन्योजहांअभेद
सोसारोपामलहैरूपकहाभरतवेद॥७२॥वार्त्ता॥उपमानकोअौ
उपमेयकोएककरिवर्ननकरेजहां तहांरूपकजानीये॥दोहरा
द्विविधसुरूपककहितकविमिलतद्रूपअभेद॥अधिकन्यूनसम
दुहुनिकेतीनतीनयेभेद॥७३॥वार्त्ता॥सोरूपकद्वैप्रकारकौ॥
एकतद्रूपरूपक॥दूजोअभेदरूपक॥इनदुहूंनिकेतीनतीनभेद
अधिकतद्रूप॥न्यूनतद्रूप॥समतद्रूप॥अधिकअभेद॥न्यूनअ
भेद॥समअभेद॥अैसेषटभेदरूपककेजानीये॥अथतद्रूपरू
पकलक्षन॥जहंप्रसिद्धउपमानतेप्रकृतजुदो उपमान॥क
रिवरनततद्रूपतहंकहितसुकाविसुग्यान॥७४॥वार्त्ता जहां
उपमेयकोप्रसिद्धउपमानतेजुदोहीउपमानकरिकेहे तहां
तद्रूपरूपकजानीये॥अभेदरूपकलक्षन यथा॥जहंप्रसिद्धउ
पमानसोंप्रकृतिअभेदनिहार सोअभेदरूपककहितको
विदहृदयविचार॥७५॥वार्त्ता॥जहांप्रकृतिउपमेयको
प्रसिद्धउपमानसोंभेदनहींराखनो तहांअभेदरूपक॥

8A

सर्वकोउदाहर्नयथा मुषविधुवाविधुतेवरनिसद्योसजोतसषी
यहश्रोरकमलानसिंधुतेमई॥ एईद्रगकमलनकोमकेकमल
श्रोरुफिरतभवनवालकनकलतामई॥ मंगऊतमंगगंगसंभु
नप्रकासीश्रोठश्रधरसूपल्लवलिलाईम्रदुतारई॥ प्रस
धर्मवाचकलुप्तोपमासीभासतहैउत्तरग्रंथमउपमेयकी
प्रभाघई॥ १६॥ वार्त्ता॥ मुषससहैयहरूपक॥ एकससजुदो
राष्यो यातेतद्रूप॥ याकीदिनरातजोतहै यहश्रधिकता १॥
यहलक्षमीहै यातेरूपक॥ प्रसिद्धउपमानलक्षमी सोजु
दीहीलक्षमीठहिराई यातेतद्रूप यहसागरतेनहीभई तातें
न्यूनता २॥ श्रागेनैनकमलतेरूपक श्रौरुकमलकोजुदो
राष्यो यातेतद्रूप॥ घटवढतानही यातेसमतद्रूप॥ ३॥ श्रा
गेवालयहकनकलताहै यातेरूपक श्रौरकनकलताजु
दीनहीराषी यातेश्रभेद गवनकरेहै यहश्रधिकता ४॥
मांगऊतमांग सीसपैगंगाहै यहरूपक श्रौरगंगाजुदी
नहीराषी यातेश्रभेद शिवनेनही प्रकासकरी यहउप
मेयमैन्यूनता॥ ५॥ श्रधरपल्लवमैरूपक॥ श्रौरपल्लवजु
दोनहीराष्यो यातेश्रभेद॥ म्रदुताश्ररुनताश्रधरोंमैप

९

1 द्वौमैसमानहै यातेसमअभेद ६ ॥ ग्रंथयातेरूपकालंकार
यथा॥ रूपकरूपकरैजहां एकसावयवजान॥ बियनिरवयवब
खानियेपरंपरितत्रयमान॥७९॥ प्रथमद्विविधसविषयवहुरि
एकदेसरूविवर्त्ती॥ दूजोऊद्वैभेदहुअरमालाकरितिहिवर्त्ति॥ वार्त्ता
तीजोअरुहुसलेसविधितहांएविधिदाय॥ अरु
रूमालाहाइवकिप्रतिआठभांतियोंहोये॥८०॥ वार्ता॥
सावयवरूपकद्वैप्रकारकोहै॥ एकसविषयसाव
यवरूपक॥ दूजोएकदेसवर्त्तीसावयवरूपक॥ अरु
निरवयवरूपकहूद्वैप्रकारकोहै॥ अरुहुनिरवयव॥ मालानि
रवयव॥ अरुपरंपरितरूपककेचारभेद॥ अरुहुअरुहुपरंप
रित॥१॥ मालाअरुहुपरंपरित॥२॥ अरुहुस्लेषपरंपरित
३॥ मालास्लेषपरंपरित॥४॥ याप्रकाररूपकालंकार
केआठभेदहै॥ प्रथमसविषयसावयवरूपकोलक्षन॥
याहीकोसांगरूपककहितहै॥ सववस्तविषयसजहांआ
रोपितसर्वअर्थी॥ कहीयतअपनेसब्दकरिजानहुसकविस
मर्थी॥८०॥ सोसविषयसावयवहैसकलवस्तुबखान॥
हरिघनपटतडिमुक्तावगमुकटइंद्रधनुजान॥८१॥ यथावर्क

१A

मोतिनके हारते महा रुचित नयत है जिनकी अमित कांति निरमल भारी है ॥ धवल दुकूल सोहै चांदनी मरीसरूप चरित्रा की जोतिनैननि वनाइ निरधारी है ॥ मंद मुसिकानि सो पियसजा मैदेखियतु मेरे जानविधि ऐसी दूजी न सवारी है पूरनपरम सरूधानिधि तेरो वदन है कामिनि के वृंदवी चराकातूं निहारी है ॥ ८२ ॥ यथावा ॥ लोचन वदन कर चरन कमल फूले कल अलिकावलि अलिन के निकर सी कुच के कपट कोक कोकी के जुगल लसैं हारल तालिलित तरंग तति दरसी ॥ दीरघ नितंव दुहुं तीरनि विराजरही त्यों त्यों अति वढी ज्यों ज्यों नेह घटा वरसी ॥ सारजिरकसी कीग लकसो मकोरैं लेत सुंदरी लसति सोभा सुधारस सरसी ॥ ८३ ॥ पथावा ॥ चपलान चमकचमक हथियारनि की वोलत न मोर वंदी सयन है समाज के ॥ जहां तहां गाजत नवाजत दमामे दीह देतिन दिखाई दिन मनसी नेलाज के ॥ चलि चलि चंद मुखी सामने सवा पै वेग सोमनजुके सो दास अनिरसूव साज के ॥ चढि चढि पवन तुरंग निगगन मनचाहत फिरत चंद जोधा तम राज के ॥ ८४ ॥

अथएकदेसवर्त्तीसावयवरूपकलक्षन॥ कितनेराचनिभा
षियतकितनेअर्थगहीत॥ एकदेसवर्त्तीसोरूपकनिरूपक
विवुधनिमीत॥ ८५॥ सोइकदेसविवर्त्तिहै जहंहैकहेविनु
एक॥ मुखविधुअरुमगमदविंदुअंकलषतरूपियगहिटेक
८६॥ यथा॥ ऊजलवसनसाजेराजेहरिराधिकातौ
सीयेविमलनिससरदजुन्हाईहै॥ फूलरहीवेलीअलवे
लीसीफिरतअलीफूलनिकीसेंजभांतभांतनिवनाईहै
देषवनीनीकीरासमंडलमहिलमांझजवहरिरीझहा
रलताऊरलाईहै॥ छोडकेअधरमोनधरनहीवांसु
रीहूंमोरचंद्रकाहूंदुतिदेषविलषाईहै॥ ८७॥ इहांरा
समंडलमहिलयहरूपकसावदतोहै हाररलताकोनाय
कत्वमुरलीमोरचंद्रकाकोप्रतिनायकत्वयहरूपकअ
र्थतेपाईयतहै यातेएकदेसवर्त्तीरूपक हाररलताते
राधिकाजीमुरलीमोरचंद्रकातेश्रीरसअगोपी
अथनिरवयवरूपकलक्षन याहीकोनिरंगरूप
ककहितहै॥ कहिनिरंगदैभेदकोप्रकृतरूमालारू
प॥ होयजुरूपकअंगविनकहितकविनकेभूप ८८

10A

सुन: जहां नकहीये धर्मकोमित्योसरूपवषान॥ रूपकसु
जुवनीयसामिरंगपहिचान॥ ८९॥ सवैया॥ पूतनिहूं सिग्र
चेतकरीग्ररवैसोदवानलपीहींलयोहै॥ मारुयोग्रघा
सुरकेसीहत्योगजकोरद तोरिगं जारगयोहै॥ एकहीं
हाथऊठायोगोवर्द्धनयोंसुगरोजजपाल दयोहै॥ नं
दकोनंदनभागवलीव्रजमैकुलदीपकग्रानिभयो
योहै ८०॥ यथावा॥ रीतनिकीधुनिलेतिकुरंगज्यों
ह्वैथिरचित्रलिषीप्रतिमासी॥ नंदकुमारतिहारीक
थासुनियधुनि पूछैजतायविथासी॥ ग्रंतरसोवति
नींदविनाहूंजुताहीतेजानतिहैंरसरासी॥ बाउररो
पीजुनेहलतातिहिंसींचनिलाग्योमनोजविलासी॥
८१॥ मालानिरवयवंयथा॥ वेदनिकीनिधिजोव्र
जकीरिधिभारेगोवर्द्धनकोजुधरैया॥ केसीकोकाल
मनोरथनंदकोगोपीनकेमनकोजुमथैया॥ दीनको
बंधुदुषीनकोग्रानंदकंसमहारिपुकोहरवैया॥ भू
मिकोभूषिनभागिकोभाजनधर्मकोधीरजवीरकन्हैया
८२॥ सोहतिहैसुधरापनिकोघरपूरनग्रानंदकीरज
धानी॥ भोनकोदीपकवंसकोभागसुहागकीसीवसु

जहांएकेकोभांतिवहुकहिरूपकैकैरूप
मालारूपकतिहिकहैमहाकाविनकेभूप॥

॥ आयवखानी॥ केलिकी कोविद औधिस देशकीलात्र
पुरीचतुरापनवानी॥ वेठीविनाजै सकस भारति
की ठकुरायनिराधिकारानी॥ ६१॥ अथ परंपरित
रूपकलक्षन॥ जहां आरोपसाधककेहे आरोपांतर
हेत॥ परंपरितसोविधहै एकद्वसेय सचेत॥ ६४॥
तहां एकद्वैविधिवहुर एकदुरमालाधारि॥ ए
कएकप्रतिजानीयो परंपरितनिरधार॥ ६५॥
वार्त्ता॥ जहां आरोपांतरकेहेत साधकआरोपएक
औरकहे सो परंपरित॥ आरोपांतरकहाजो कछु
औरआरोप्योहै॥ जैसे रूपरनिरवयवमै श्रीकृस
को व्रजको चंद्र आरोप्यो॥ तौ ताचंद्रकेलीये व्रजको
हूकछू आरोपनकीयोचाहीये परजहां साध
कतासंभवे तहां व्रजको आकासको आरोपको
चाहीये॥ क्योंकि चंद्रमा आकासमैरहितहै॥ तौ
व्रजनभचंदहहरि असे सकहिये तौ साधक रोप
नकहीये॥ यहरीतपरंपरितमै कहीहै सो ता
ते आरोपांतरकेहेत एक आरोप और हूकहिये
परसाधकतालियेहोय॥ सोपरंपरित अदा

11A

हनिमैजितायहै॥पांठांतरहूंकहियतहै॥दोहरा॥परंपरितसंवंधतें
हांवर्ननमैकछुहोय॥केवलशुद्धश्लेषकै द्वैविधवर्नितसोय॥९६॥
तहांशुद्धद्वैविधवहुरशुद्धरुमालाधारि॥इहीभांतिसोंश्ले
षगतपरंपरितयेचारि॥९७॥वार्त्ता॥जहांवर्ननमैकछू
संवंधहोय तहांपरंपरित॥सोद्विविध॥एकशुद्धपरंपरि
त॥एकश्लेषपरंपरित॥तहांफेरशुद्धद्वैविधहै॥शुद्धशुद्ध
परंपरित॥मालाशुद्धपरंपरित॥शुद्धश्लेषपरंपरित॥मा
लाश्लेषपरंपरित॥यांचारिपरंपरितकेभेदहै॥सर्वको
उदाहर्न दोहा॥गोपवंसमस्तकमुकटभवनथंभअरुदीप
रसवरसनव्रजइंदुरवितमअरितपरजनीप॥९८॥वार्त्ता
इहांहरिकोमुकटत्वआरोप्यौ ताकेलीयेगोपवंसकोमस्त
कत्वआरोप्यो॥सोयहसाधकआरोपहै॥क्योंमुकटसी
सपैहोतहै॥यातेपरंपरित॥श्लेषनहीयातेशुद्ध॥एक
शुद्ध वारहीवरन्योयातेशुद्धपरंपरित॥रूपकहैही॥और
गोपवंसहीजोहैभवनताकेथंभहैं अरुदीपहैं॥इहाथं
भ... दीपहरिकोआरोप्या ताकेलीयेगोपवंसकोभव
त्वआरोप्यो यातेपरंपरित॥वहुतवारकह्योयातेंपरं माला
परित॥श्लेषनहीयातेमालाशुद्धपरंपरित॥और...रि

12 कोइंद्रआरोप्यो॥याइंद्रकेलीयेहरिमैंरसवरसनताकही
यातेपरंपरित॥तहांरसशब्दश्लेषहै॥रसजल॥रसप्रेम
इंद्रजलवरसैहै॥हरिप्रेमवरसैहै॥तौईहांहरिकोतोइंद्रआ
रोप्यो॥अरुप्रेमवरसैहै॥ताप्रेमकोजलआरोप्यो॥यहसाधक
आरोप्यनभयो॥परजलअरुप्रेमन्यारोन्यारोनकह्यो॥रस
कह्यो॥रसकेदोऊअर्थजलप्रेम॥यातेश्लेषपरंपरित॥
एकवारकहिनतेशब्दश्लेषपरंपरित॥फेरहरिकोरवि
थाप्यो॥दोऊकोसाधकशब्द तमअरि॥तमअंधकार॥तम
अग्यान॥जैसेहरिकोरूपथाप्यो॥हरिजोहैअग्यानकोदूर
करेहैं॥ताअग्यानकोअंधकारथाप्योचाहीये॥तौऐसेचा
हीयेहरिरूपिअग्यानअंधकारकोनासतहै॥तहांतमश
ब्दराख्यो॥तममैदोऊकहै अग्यानअरुअंधकार॥यातेतम
श्लेषकेलीयेधर्‍यो॥ऐसेहीतमीपजोहैचंद्रमासोआरो
प्योहरिको॥तहांदोऊकोसाधकशब्द॥अरितप॥तपश
ब्दश्लेष॥तपग्रीषम तपदुःखमनको॥जैसेहरिको
चंदथाप्यो॥हरिजोहैमनकेदुःखकोदूरकरेहैं॥तिसम
नकेदुःखकोग्रीषमकोतपथाप्योचाहीये॥तौऐसेचा
हीयेहरिचंद्रमामनकेदुःखरूपीतपकोदूरकरतहै

12A

तहांतपमावरूनाह्यो तपमैदोऊकहैमनकोदुःष्यम्रूतप्त॥यातेत
पस्लेषकेलीयेनाह्यो यातेस्लेषपरंपरित॥एकहरिकोवहुवा
रकह्यो यातेमालास्लेषपरंपरितभयो॥यहिचारभेदपरंपरि
तरूपककेभये॥सकारकलानिधकोलछन॥इकम्रारोपऊपाय
जहांहोयग्रन्यम्रारोप॥भाषतहैवहिपरंपरितचारिभेदहैस्रो
प॥९७॥स्लिष्टम्रोरम्रस्लिष्टकहिवाचकदुहूंप्रकार॥के
वलमालाभेदकरिचारिभांतिनिरधार॥९८॥स्लिष्टपरं
परितकेवलरूपक यथा॥साहिवनंदकुमाररूञ्ज्ञानंकी
वित्तकविंदनियोंपरसंसी॥म्राठोदिगीसनिग्पारहोईस
निस्रोम्रवनीसनितंम्रवतंसी॥पूरनचेतहिमंसकीम्रंसी
तिहूंपुरकीतिमरावलिनंसी॥मुक्तनिवीचघरेकचि
कोस्रुविमानसमध्यनिवासनिहंसी॥९९॥यथावा॥
तुमसंगरमांहस्रसग्गनिदागतषग्गकेषलघरेम्रति
हो॥दिनमानदैदैगयदारिदवारितदीनदुनीजनकोग
तिहो॥करततनिकेकरतारघरातलपोसनमाहघरेर
तिहो॥सवमानसकेजियकीपहिचानतमानसहंसमही
पतिहो॥१००॥ईहांमानसजोहैमनसोईभयोमानसरोवरष
हम्रारोप हंसलकेम्रारोपकोहेतुहै॥स्लिष्टपरंपरितमाला
रूपक यथा॥साधुजनमानसनिवासराजहंसकमलाकर

विलासकरिवेकोदिनकरहै॥कुवलयआनंदनिधानद्विजराज
लोकजीवननिदानवरसानेजलधरहै॥माईविजैप्रथमप्रसि
द्धधरभीमरतिविपुलविनोदकेनिकेतपंचसरहै॥राजतवि
सालवंसमुक्तारतनतुमरामचंद्रऐसेआजुएकैनरवरहै
१०१॥अस्लिष्टपरंपरितकेवलरूपक॥यथा॥संदरआगेभयोन
लभूपरभोनहैतैसीयेसुंदरताको॥पारथआदिमहारथिकेसम
जीवनएकसवैजनताको॥साहवश्रीरघुवीरभूपालहिआजु
भलेकविकोविदताको॥श्रीदसरथकोनंदमहावलीकंदहै
कीरतिकल्पलताको॥१०२॥अस्लिष्टपरंपरितमालारूपक
यथा॥विजयमतंगजकोराजतिअलानसिलासेतुकविदार
ददरदपारावारको॥चंडकरवारचंडकरकोउदयगिरिके
केलिकोउसीसासधसीसकुमारको॥उन्नतअमंदमंदरा
चलविलोकियतसंगरसमुद्रप्रमथनिकेविहारको॥वैरि
वनिताकेसंगसेंदुरविलापकरराजैकररामवीरभूप
तिउदारको॥१०३॥वार्त्ता॥यहआठभेदरूपकालंकारके
भये॥ दोहा॥रूपकहैइवशव्दविनुइवजुतउपमाजानि॥उत्प्रे
क्षामनुजनुजहांइमइनभेदवषानि॥१०४॥अथपरिनामा
लंकारलक्षन॥उपमानजुउपमेयह्वैप्रक्षतिक्रियाकेअर्थ॥
सोपरिनामवषानहीपंडितरूकविसमर्थ॥१०५अनपचि॥

14

13A

पारावारपयकोअपारजानैइंदराअरुहिमगिरिजानेहरगेह
कीगुसांइनी॥मानसरजानेराजहंसनकेवंसचंद्रचंद्रकाच
कोरजानैतिमरनसायनी॥विधजानैसारदमहारदगनेस
जानैग्पानीजानैनारदअरुपारदरसायनी॥रामनपनाव
रासकजसजानैचंचरीकसारतरुसमनसुवाससुघसायनी
११३॥यथावा॥

एककरिअनेकभांतिउस्लेष यथा मुखमैसरदचंद
नैननिमैअरविंदअंगकेसुगंधनिमैमकरंदजालहै।दंतनि
मैकुंदअरुदुगंतनिमैसुधावंदचालमैगयंदमदसुंदरम
रालहै॥वालनिमैपिकपानिपांयनिमैपल्लवकुचनिकलको
लकलीभुजनिमृनालहै॥कचनतिमररासनासिकामै
सुकचंचुएकैवहुभांतिकीवनाईवहिवालहै॥१५॥वार्त्ता
याहीकोऔरअलंकारमिल्पेउल्लेखकहितहै॥दूजोभेदयाको
सुद्धहै वामैऔरअलंकारनहीं॥अथस्मरणालंकारको

14

सोपरिनामजहांग्रारोप्योविषयरूपहैग्रापु॥कारजकोथ
महोयतहांयहउदाहरनकरियोप॥१०६॥ यथा॥मगमैह
रिदानकोछंदभयेवहग्रावतिकेसिहूकेनवसैं॥विहसैवरहूव
रहजीढिंगहैनिकसैं॥फिरिहूफिरछांढी ह्वैदेषतिहैग्ररुदेत
जुवावषरीसरसैं॥वहकावतिवातनिग्वालिनिकोनंदनंद
नसोंमुषचंदहसैं॥ १०७॥यथावा दोहा॥पटसोंपोंछुपरी
करोषरीभयानकभेष॥नागनिह्वैलागतिदृगनिनागवे
लरंगरेष॥१०८॥ग्रथउल्लेषालंकारल॰॥वहुतभांतिसो
वहुतजहांकरतएकउल्लेष॥एकोकरतग्रनेकविधिजहां
उल्लेषसलेष॥ १०९॥ग्रन्यच्चि॥एकनिकोजोहेतुतेरूप
ग्रनेकनिरूताम॥होयग्रनेकनिकोजहांसोउल्लेषवषान
११०॥एकसुद्धउल्लेषइकमिल्योग्रौरलंकार॥सकल
कवीश्वरभाषहींतातेदोयप्रकार॥१११॥ग्रनेककरग्र
नेकभांतिउल्लेषयथा॥वांदरवीरमिलेसवभांतिसुग्री
वहितकेहितुवाकरिजाने॥ग्रौधिकेसाहिवयोंकरग्रौर
निग्रापनेमानसमाहवषानें॥भूलभरेग्रभिमानभरे
सवराकसलोगनिमानसमानें॥श्रीरघुनाथजुहैसो
वनायकेकाहूधोंग्रानिहियैपहिचानैं॥ ११२॥यथाव॥

14A

लच्छन॥जहांहोयउपमेयमैउपमानहिकीसुद्धि॥सोस्म
रणालंकारहैभाषतसुकविसुवुद्धि॥११६॥अन्यच्च॥ज्यों
अनुभवत्योंअर्थकोसुमिरनतिहिसमदेष॥अलंकारसु
मिरनिवहेअपनेहियंअविरेष॥११७॥तासमानकेरूपा
नतेजोसुधिहोयविसेषि॥आलंकारिककेकहेस्मरणअले
कातिलेषि॥११८॥यथा॥राजसमाजवनेविचमोहनराज
तमंडलकामिनिकै॥वनीएकतेएकअनूपरह्योरसदेष
तिजानकीजामनिकै॥सोचकआयघटालषकेसुघनलग
येसुधिभामनिकै॥लपटानीहियेसुधिआईहैराधिका
देषतिहीघनदामनिकै॥११९॥यथावा॥पेलिमहाव
लदंतिनिकोसमसेरनिसोघमसानमचावें॥वैरीवनैतके
माल मुंडनिरुंडनिमल्लपुरारिहूंकोपहुचावै॥आनतकीमहा
धारवहाइवडेवरवंडभसुंडवहावै॥तोहिलषेरनभूमके
भीतरभीमकीपारथकीसुधिआवै॥१२०॥वार्त्ता॥कि
तहूंसंवंधीकेदरसनसरिसवस्तुकोस्मर्णहोय॥यथा॥लषि
मनलीजेएकललितनिकुंजतलतापतिहैदीपतिप्रचंडचंडभा
नकी॥एहोरघुनाथइहिनाहिनतपननभनिसावरलसैगत
दीयेकामवानकी॥सूरजरासीमैएकजाम्योजायकैसेजाते

15 15

धारतहैस्पामताकुरंगकीनिम्रानकी॥ कहांहैकुरंगनैनीस
वसःसरंगदैनी॥होगजगैनीम्रायजाहुकिनजानकी॥१
२१॥

320